नईदुनिया | 17
इंदौर, बुधवार 02 मार्च 2016

साइबर क्राइम से निपटने के लिए 'सेफ मोड'

एक जिंदगी, दो जहान

कुछ साल पहले तक हम सिर्फ एक ही दुनिया में जीते थे, जिसे असल दुनिया कहा जाता है। एक ऐसी दुनिया जहां हम एक दूसरे को देख सकते हैं, बातचीत कर सकते हैं, छू सकते हैं, महसूस कर सकते हैं और समझ सकते हैं। इस क्रम में हम कई बार गलती भी करते हैं, लेकिन कम से कम इसका आकलन करने का मौका तो होता है, क्योंकि हम दोनों एक-दूसरे के सामने मौजूद रहते हैं। हम अंदाजा लगा सकते हैं कि सामने वाले इंसान के दिमाग में क्या चल रहा है, उससे हमें पॉजिटिव संकेत मिल रहे हैं या निगेटिव?

आज बड़ी समस्याएं पैदा हो रही हैं, क्योंकि हम एक नहीं, दो तरह की दुनिया में जी रहे हैं। यह दूसरी दुनिया है, आभासी दुनिया या 'वर्चुअल वर्ल्ड'। इस वर्चुअल वर्ल्ड में बिताई जा रही समय की सीमा कल्पना से बाहर है। खासतौर पर युवा और बधो अपने माता-पिता की तुलना में कई गुना ज्यादा वक्त वर्चुअल वर्ल्ड को दे रहे हैं। यहां तक कि जितना रियल वर्ल्ड में नहीं रहते, उससे ज्यादा वर्चुअल या काल्पनिक जगत में गुजारते हैं और यह वक्त हमारे जीवन में बढ़ता जा रहा है। ऐसे में यहां भी कई खतरे बढ़ गए हैं, जिससे हमारे निजी और व्यावसायिक जीवन के अलावा कई तरह की हानि भी पहुंच रही है। जागरुकता की कमी के कारण हम खतरों से निपटने में सक्षम नहीं हैं।

– वरुण कपूर

हर गुरुवार पढ़ें यह नया कॉलम

इन्हीं कमियों को दूर करने और साइबर क्राइम की चुनौतियों से निपटने के लिए 'नईदुनिया' ने अभियान शुरू किया है और इसी के तहत हम अपने पाठकों के लिए हर सप्ताह गुरुवार के दिन 'सेफ मोड' कॉलम लेकर आएंगे।